

प्रारंभिक परीक्षा

पीएम मित्र पार्क

संदर्भ

प्रधानमंत्री मोदी ने मध्य प्रदेश के धार जिले में देश के पहले पीएम मेगा इंटीग्रेटेड टेक्सटाइल रीजन एंड अपैरल (PM MITRA) पार्क की आधारशिला रखी।

पीएम मित्र पार्क के बारे में -

- इसे 2021 में कपड़ा मंत्रालय के तहत लॉन्च किया गया था।
- उद्देश्य: विश्व स्तरीय औद्योगिक बुनियादी ढांचे का विकास करना जो अत्याधुनिक प्रौद्योगिकी को आकर्षित करेगा और वस्त्र क्षेत्र में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) और स्थानीय निवेश को बढ़ावा देगा।
- विशेषताएँ:
 - एकीकृत मूल्य श्रृंखला: सभी गतिविधियाँ - कटाई, बुनाई, रंगाई, प्रसंस्करण और परिधान - एक ही क्षेत्र में रखी जाती हैं, जिससे परिवहन लागत और टर्नअराउंड समय कम हो जाता है।
 - आधुनिक अवसंरचना: गुणवत्तापूर्ण सड़कों, विश्वसनीय बिजली और पानी की आपूर्ति, श्रमिक छात्रावासों, लॉजिस्टिक्स केंद्रों, प्लग-एंड-प्ले फैक्ट्री इकाइयों के साथ-साथ अनुसंधान एवं विकास, कौशल प्रशिक्षण और वाणिज्यिक सुविधाओं के लिए समर्पित स्थान से सुसज्जित।
 - रोजगार और निवेश: प्रत्येक पार्क से लगभग 1 लाख प्रत्यक्ष रोजगार और 2 लाख अप्रत्यक्ष रोजगार सृजित होने का अनुमान है, जबकि 70,000 करोड़ रुपये से अधिक का निवेश आकर्षित होगा।
 - पीपीपी मॉडल: पार्कों का प्रबंधन विशेष प्रयोजन वाहन (SPV) के माध्यम से किया जाएगा, जिसे निजी डेवलपर्स की भागीदारी के साथ केंद्र और राज्य सरकारों द्वारा संयुक्त रूप से बढ़ावा दिया जाएगा।
 - पूंजीगत सहायता एवं प्रोत्साहन: ग्रीनफील्ड परियोजनाओं के लिए, केंद्रीय सहायता परियोजना लागत के 30% तक (अधिकतम 500 करोड़ रुपये) को कवर करेगी, इसके अलावा पार्कों के अंदर संचालित इकाइयों के लिए उत्पादन से जुड़े प्रोत्साहन भी दिए जाएंगे।
- पीएम मित्र पार्कों का स्थान (अब तक घोषित):
 - मध्य प्रदेश: धार जिला
 - तमिलनाडु: विरुधुनगर
 - कर्नाटक: कलबुर्गी
 - तेलंगाना: वारंगल
 - गुजरात: नवसारी
 - महाराष्ट्र: अमरावती
 - उत्तर प्रदेश: लखनऊ

स्रोत: [द हिंदू](#)

चीता का स्थानांतरण

संदर्भ

प्रोजेक्ट चीता की तीसरी वर्षगांठ के अवसर पर धीरा नामक मादा चीता को कुनो राष्ट्रीय उद्यान से मध्य प्रदेश के गांधीसागर वन्यजीव अभयारण्य में स्थानांतरित किया गया है।

प्रोजेक्ट चीता के बारे में -

- **लॉन्च:** 17 सितंबर 2022
- **उद्देश्य:** भारत में चीतों को पुनः लाना, जहां वे 1952 में शिकार और आवास के नुकसान के कारण विलुप्त हो गए थे।
- **चीतों का स्रोत:** नामीबिया और दक्षिण अफ्रीका से इन जानवरों को भारत लाया गया है।
- **कार्यान्वयन:** राज्य वन विभागों और अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञों के सहयोग से राष्ट्रीय बाघ संरक्षण प्राधिकरण (NTCA) द्वारा प्रबंधित।
- **भारत में वर्तमान गणना:** कुनो और गांधीसागर के बीच, भारत में 27 चीते हैं -
 - 11 वयस्क अफ्रीकी देशों से लाए गए,
 - 16 भारतीय मूल के शावक।

गांधीसागर वन्यजीव अभयारण्य -

- **अवस्थिति:** राजस्थान की सीमा से लगे पश्चिमी मध्य प्रदेश के मंदसौर और नीमच जिले।
- **अधिसूचित:** 1974 में वन्यजीव अभयारण्य के रूप में
- **नदी:** चम्बल नदी अभयारण्य को दो भागों में विभाजित करती है।
- **वनस्पति:** खैर, सलाई, तेंदू, पलाश आदि।
- **जीव-जंतु:** चिंकारा, नीलगाय, चित्तीदार हिरण, तेंदुआ, धारीदार लकड़बग्घा और सियार आदि।
 - मगरमच्छों और कछुओं की भी अच्छी आबादी है।
- **ऐतिहासिक स्थान:** चतुर्भुजनाथ मंदिर, भड़काजी शैल चित्र और हिंगलाजगढ़ किला

स्रोत: द हिंदू

पेरियार टाइगर रिजर्व

संदर्भ

राज्य वित्त निरीक्षण विंग की रिपोर्ट में केरल के पेरियार टाइगर रिजर्व (PTR) में वित्तीय अनियमितताओं का खुलासा हुआ है।

पेरियार टाइगर रिजर्व के बारे में -

- अवस्थिति: केरल के पश्चिमी घाट।
- इसे 1978 में बाघ अभयारण्य(Tiger Reserve) घोषित किया गया था।
- दो मुख्य नदियाँ, पेरियार और पम्बा, इस रिजर्व में पानी पहुंचाती हैं।
- यह स्थान मन्नार और पालियन सहित कई जनजातीय समुदायों का निवास स्थान है।
- जीव-जंतु:
 - इसमें हाथी, सांभर, गौर, चूहा हिरण, डोल या भौंकने वाला हिरण, भारतीय जंगली कुत्ता और बाघ शामिल हैं।
 - पेरियार में प्राइमेट्स की चार प्रमुख प्रजातियाँ भी पाई जाती हैं - दुर्लभ शेर-पूछ वाला मकाक, नीलगिरि लंगूर, गीज़ गोल्डन लंगूर, सामान्य लंगूर और बोनेट मकाक।
 - दुर्लभ नीलगिरि तहर का निवास स्थान।

स्रोत: द हिंदू



वित्त आयोग

संदर्भ

केरल सरकार ने 16वें वित्त आयोग से अनुपूरक अनुदान और सकल राज्य घरेलू उत्पाद (GSDP) के 0.5% की अस्थायी अतिरिक्त उधार सीमा का अनुरोध किया है।

भारत का वित्त आयोग (Finance Commission-FC) -

- यह भारतीय संविधान के अनुच्छेद-280 के तहत स्थापित एक संवैधानिक निकाय है।
- कार्य:
 - शुद्ध कर राजस्व के वितरण की सिफारिश करना (ऊर्ध्वाधर हस्तांतरण)।
 - राज्यों के बीच वितरण की सिफारिश करना (क्षैतिज हस्तांतरण)।
 - केंद्र से राज्यों को अनुदान सहायता का सुझाव देना।
 - राजकोषीय समेकन और सुदृढ़ वित्तीय प्रबंधन में सुधार के उपाय सुझाना।
- कार्यकाल: भारत के राष्ट्रपति द्वारा प्रत्येक 5 वर्ष पर गठित।
- वर्तमान आयोग: 16वां वित्त आयोग (अध्यक्ष: डॉ. अरविंद पनगढ़िया), कार्यकाल 2023-2028।

भारत में कर हस्तांतरण -

- संविधान के अनुच्छेद-270 में केन्द्र सरकार द्वारा एकत्रित शुद्ध कर आय को केन्द्र और राज्यों के बीच वितरित करने की योजना का प्रावधान है।
- ऊर्ध्वाधर हस्तांतरण (संघ से राज्य): संघीय करों का हिस्सा राज्यों को हस्तांतरित किया जाता है।
 - 15वें वित्त आयोग (2021-26) के अनुसार: राज्यों को केंद्रीय करों के विभाज्य पूल का 41% प्राप्त होता है।
 - इससे पहले 14वें वित्त आयोग ने इसे बढ़ाकर 42% कर दिया था।
- क्षैतिज हस्तांतरण (राज्यों के बीच): मानदंड/भार के आधार पर:

Table 1: The criteria for horizontal devolution among States over the last five FCs

Criteria	11th FC 2000-05	12th FC 2005-10	13th FC 2010-15	14th FC 2015-20	15th FC 2021-26
Income Distance	62.5	50	47.5	50	45
Population (1971 Census)	10	25	25	17.5	-
Population (2011 Census)	-	-	-	10	15
Area	7.5	10	10	15	15
Forest cover	-	-	-	7.5	-
Forest and ecology	-	-	-	-	10
Infrastructure index	7.5	-	-	-	-
Fiscal discipline	7.5	7.5	17.5	-	-
Demographic performance	-	-	-	-	12.5
Tax effort	5	7.5	-	-	2.5
Total	100	100	100	100	100

- सहायता अनुदान (अनुच्छेद-275):
 - राजस्व घाटा अनुदान।
 - क्षेत्रीय अनुदान (स्वास्थ्य, शिक्षा)।
 - आपदा प्रबंधन अनुदान।

स्रोत: [द हिंदू](#)

उन्नत वायु रक्षा रडार

संदर्भ

भारतीय सेना ने उत्तरी और पश्चिमी सीमाओं पर अपने रक्षा नेटवर्क को मजबूत करने के लिए उन्नत वायु रक्षा (AD) रडारों की एक नई श्रृंखला की खरीद शुरू कर दी है।

रडार (रेडियो डिटेक्शन एंड रेंजिंग) क्या है?

- यह एक इलेक्ट्रॉनिक प्रणाली है जो रेडियो तरंगों का उपयोग करके वस्तुओं का पता लगाने, उनका स्थान निर्धारित करने और उनका ट्रैक करने का कार्य करती है। यह रेडियो तरंगों को प्रसारित करती है और वस्तुओं से परावर्तित होने वाले प्रतिध्वनि (echo) का विश्लेषण करती है।
- घटक:
 - ट्रांसमीटर: आसपास के क्षेत्र में रेडियो तरंगें भेजता है।
 - रिसीवर: जब रेडियो तरंगें किसी वस्तु से टकराती हैं तो परावर्तित संकेतों (प्रतिध्वनियों) को कैच करता है।
 - प्रोसेसर/डिस्प्ले यूनिट: परावर्तित संकेतों का विश्लेषण करता है और लक्ष्य का स्थान और गति दिखाता है।
- कार्य:
 - लक्ष्य की दिशा (कोण) ज्ञात करता है।
 - वस्तु की दूरी (रेंज) मापता है।
 - गतिशील लक्ष्यों के वेग (गति) की गणना करता है।
 - समय के साथ प्रतिबिंबों की निगरानी करके, रडार लक्ष्य के प्रक्षेप पथ का पूर्वानुमान लगा सकता है।
- वायु रक्षा (AD) रडार के प्रकार:
 - सर्विलांस रडार: हवाई वस्तुओं का पता लगाने के लिए लगातार आसमान को स्कैन करते हैं।
 - स्थितिजन्य जागरूकता प्रदान करते हैं लेकिन सीधे हथियारों से जुड़े नहीं हैं।
 - फायर कंट्रोल रडार: सतह से हवा में मार करने वाली मिसाइलों या विमान भेदी तोपों जैसे हथियारों के साथ मिलकर काम करते हैं।
 - लक्ष्य को लॉक करते हैं और हथियारों को मार्गदर्शन देकर उन्हें नष्ट करने में मदद करते हैं।

स्रोत: [इंडियन एक्सप्रेस](#)

भूमध्यसागरीय हार्वेस्टर चींटी (मेसोर इबेरिकस)

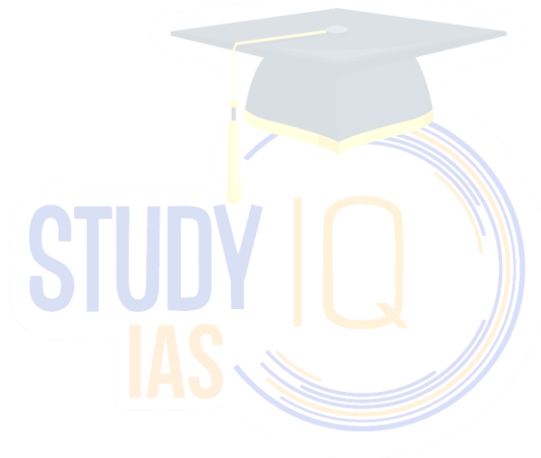
संदर्भ

शोधकर्ताओं ने पता लगाया है कि मेसोर इबेरिकस (भूमध्यसागरीय हार्वेस्टर चींटी) की रानियां एक अलग प्रजाति, मेसोर स्ट्रक्चर के नर को जन्म दे सकती हैं।

भूमध्यसागरीय हार्वेस्टर चींटी के बारे में -

- वितरण: यूरोप के भूमध्यसागरीय क्षेत्र में व्यापक रूप से पाई जाती है।
- विशेषताएँ:
 - कॉलोनी संरचना:
 - रानियाँ - प्रजनन करने वाली मादाएं जो अंडे देती हैं।
 - श्रमिक - बंध्य मादाएं जो चारा ढूंढने, घोंसला बनाने और बच्चों की देखभाल के लिए जिम्मेदार होती हैं।
 - ड्रोन (नर) - आमतौर पर प्रजनन के लिए शुक्राणु प्रदान करते हैं।
 - रानियां सीधे मेसोर स्ट्रक्चर नर को जन्म दे सकती हैं, भले ही आस-पास मेसोर स्ट्रक्चर की कोई कॉलोनी मौजूद न हो।

स्रोत: [इंडियन एक्सप्रेस](#)



वैश्विक नवाचार सूचकांक (GII) 2025

संदर्भ

विश्व बौद्धिक संपदा संगठन (WIPO) ने वैश्विक नवाचार सूचकांक (GII) 2025 जारी किया।

वैश्विक नवाचार सूचकांक (GII) 2025 की मुख्य विशेषताएं -

वैश्विक रुझान

- अनुसंधान एवं विकास वृद्धि में गिरावट: 2024 में 2.9% तक धीमी हुई और 2025 में और घटकर 2.3% होने का अनुमान है – 2010 की वित्तीय मंदी के बाद से सबसे कम।
- तकनीकी बदलाव: मंदी के बावजूद, एआई, क्वांटम कंप्यूटिंग और नवाचार समूहों में तेजी से प्रगति वैश्विक प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा दे रही है।

शीर्ष वैश्विक प्रदर्शनकर्ता (2025)

- #1 स्विट्जरलैंड - शीर्ष स्थान बरकरार।
- #2 स्वीडन, #3 संयुक्त राज्य अमेरिका - उच्च तकनीक अनुसंधान एवं विकास और नवाचार पारिस्थितिकी तंत्र में मजबूत।
- #4 कोरिया गणराज्य, #5 सिंगापुर - एशिया-प्रशांत नवाचार में अग्रणी।
- चीन (#10): शीर्ष 10 में प्रवेश, अनुसंधान एवं विकास व्यय में विश्व स्तर पर #2 स्थान पर तथा पेटेंट फाइलिंग में विश्व में अग्रणी।

भारत का प्रदर्शन -

- समग्र रैंक: #38 (2020 में #48 से ऊपर)।
- क्षेत्रीय अग्रणी: मध्य एवं दक्षिणी एशिया में #1।
- आय समूह अग्रणी: निम्न-मध्यम आय वाली अर्थव्यवस्थाओं में #1 स्थान पर है।
- ताकत:
 - ज्ञान और प्रौद्योगिकी आउटपुट: #22
 - बाजार परिष्कार: #38
- कमजोरियां:
 - व्यावसायिक परिष्कार: #64
 - बुनियादी ढांचा: #61
 - संस्थान: #58

स्रोत: [इंडियन एक्सप्रेस](#)

नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो (NCB) वार्षिक रिपोर्ट 2024

संदर्भ

केंद्रीय गृह मंत्री ने राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के एंटी-नारकोटिक्स टास्क फोर्स (ANTF) के प्रमुखों के दूसरे राष्ट्रीय सम्मेलन के उद्घाटन सत्र में नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो (NCB) की वार्षिक रिपोर्ट-2024 जारी की और ऑनलाइन ड्रग डिस्पोजल अभियान का शुभारंभ किया।

भारत में मादक पदार्थों की तस्करी का परिदृश्य -

- **कमजोर भू-रणनीतिक अवस्थिति:** दो प्रमुख वैश्विक ड्रग बेल्टों के बीच स्थित:
 - "डेथ क्रिसेंट" - अफगानिस्तान, पाकिस्तान, ईरान (प्रमुख अफीम/हेरोइन उत्पादक)।
 - "मृत्यु त्रिकोण/स्वर्ण त्रिकोण" – म्यांमार, थाईलैंड, लाओस (सिंथेटिक ड्रग्स और अफीम)।
 - इससे भारत मादक पदार्थों के लिए एक पारगमन तथा गंतव्य देश बन जाता है।
- **सीमा संबंधी कमजोरियाँ:**
 - पंजाब, राजस्थान, जम्मू और कश्मीर → पाकिस्तान से हेरोइन का प्रवाह।
 - पूर्वोत्तर राज्य → म्यांमार से फैलावा।
 - तटीय राज्य (मुंबई, गुजरात, केरल, तमिलनाडु) → सिंथेटिक दवाओं और पूर्ववर्तियों की तस्करी।
- **तस्करी में उभरते रुझान:**
 - सिंथेटिक्स की ओर बदलाव: मेथैम्फेटामाइन, एलएसडी, मेफेड्रोन का बढ़ता उपयोग।
 - गुप्त प्रयोगशालाएं: महाराष्ट्र, गुजरात, पंजाब, उत्तर-पूर्व जैसे हॉटस्पॉट में पता चलीं।
 - डार्कनेट और क्रिप्टो: ऑनलाइन मार्केटप्लेस और क्रिप्टोकॉर्सेसी गुमनाम वैश्विक लेनदेन को सक्षम करते हैं।
 - समुद्री मार्ग: चाबहार, ग्वादर, कराची बंदरगाहों के माध्यम से भारत में मादक पदार्थों की तस्करी की जाती है।
 - नई तकनीकें: सीमा पार मादक पदार्थों की डिलीवरी के लिए ड्रोन का उपयोग बढ़ रहा है (भारत-पाकिस्तान सीमा)।

मादक पदार्थों की तस्करी से निपटने के लिए भारत की पहल -

- **कानूनी:** स्वापक औषधियों और मनःप्रभावी पदार्थों के अवैध व्यापार की रोकथाम (PITNDPS) अधिनियम
- **समन्वय:** NCORD (राष्ट्रीय नारकोटिक्स समन्वय पोर्टल)।
- **डेटा:** NIDAAN (गिरफ्तार नार्को अपराधियों का राष्ट्रीय डेटाबेस)।
- **हेल्पलाइन:** MANAS - राष्ट्रीय नारकोटिक्स हेल्पलाइन।
- **जागरूकता:** नशा मुक्त भारत अभियान।

स्रोत: [पीआईबी](#)

मोरान समुदाय

संदर्भ

असम में मोरान समुदाय का प्रतिनिधित्व करने वाले संगठनों ने अनुसूचित जनजाति के रूप में मान्यता के लिए अपना प्रयास तेज कर दिया है।

मोरान समुदाय के बारे में -

- **वितरण:** असम की स्वदेशी जनजातियाँ मुख्य रूप से ऊपरी असम- तिनसुकिया, डिब्रूगढ़, शिवसागर में पाई जाती हैं।
- **इतिहास:** अहोमों के विरुद्ध **मोआमोरिया विद्रोह (1769-1805)** का नेतृत्व किया।
- **भाषा एवं संस्कृति:** पहले मोरान भाषा (डिमासा से संबंधित) बोलते थे; अब बड़े पैमाने पर असमिया भाषा का प्रयोग करते हैं।
- **आजीविका:** ब्रह्मपुत्र घाटी के साथ कृषि, मछली पकड़ने और वन संसाधनों पर निर्भर।

भारत में अनुसूचित जनजाति का दर्जा देने की प्रक्रिया -

- **संवैधानिक आधार:**
 - अनुच्छेद-366(25) के तहत परिभाषित - "अनुसूचित जनजातियाँ" वे समुदाय हैं जिन्हें अनुच्छेद-342 के तहत अधिसूचित किया गया है।
 - अनुच्छेद-342(1): राष्ट्रपति, संबंधित राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के राज्यपाल के परामर्श के बाद जनजातियों या जनजातीय समुदायों को अनुसूचित जनजाति के रूप में अधिसूचित करता है।
 - अनुच्छेद-342(2): केवल संसद ही कानून द्वारा किसी समुदाय को अनुसूचित जनजाति सूची में शामिल या बाहर कर सकती है।
- **मानदंड (संविधान में नहीं बल्कि सरकार/समितियों द्वारा विकसित):**
 - आदिम लक्षण / विशिष्ट संस्कृति।
 - भौगोलिक अलगाव।
 - बड़े पैमाने पर समुदाय के साथ संपर्क करने में झिझक।
 - पिछड़ापन (सामाजिक और आर्थिक)।
- **प्रक्रिया:**
 - प्रस्ताव संबंधित राज्य/केंद्रशासित प्रदेश सरकार से आता है।
 - इसे जनजातीय कार्य मंत्रालय (MoTA) को भेजा जाता है → जहाँ भारत के रजिस्ट्रार जनरल (RGI) और राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग (NCST) के साथ इसकी जाँच होती है।
 - यदि स्वीकृति मिलती है, तो प्रस्ताव मंत्रिमंडलीय समिति के पास जाता है।
 - अंततः संसद में एक विधेयक प्रस्तुत किया जाता है → संविधान (अनुसूचित जनजाति) आदेश, 1950 में संशोधन किया जाता है।
 - विधेयक पारित होने के बाद, राष्ट्रपति अधिसूचना जारी कर समावेशन की घोषणा करते हैं।

स्रोत: [इंडियन एक्सप्रेस](#)

सारनाथ

संदर्भ

भारत ने सारनाथ को यूनेस्को की विश्व धरोहर सूची (2025-26 चक्र) में शामिल करने के लिए आधिकारिक रूप से नामांकित किया है।

सारनाथ का ऐतिहासिक महत्व -

- **बौद्ध विरासत:** वाराणसी के निकट स्थित यह वह स्थान है जहां गौतम बुद्ध ने 528 ईसा पूर्व में अपना पहला उपदेश (धम्मचक्र प्रवर्तन) दिया था, जो बौद्ध संघ की स्थापना का प्रतीक है।
 - धमेक स्तूप इस स्थान को चिह्नित करता है।
- **मौर्य संरक्षण:** सम्राट अशोक (268-232 ईसा पूर्व) ने सारनाथ का दौरा किया, मठों का निर्माण कराया और सिंह स्तंभ का निर्माण कराया, जो बाद में भारतीय गणराज्य का प्रतीक बन गया।
- **बाद के राजवंश:** कुषाणों (प्रथम-चतुर्थ शताब्दी ई.) और गुप्तों (तृतीय-छठी शताब्दी ई.) के अधीन फला-फूला, जिन्होंने मठों का विस्तार किया और अशोक की संरचनाओं का जीर्णोद्धार किया।
 - 12वीं शताब्दी तक यह एक प्रमुख बौद्ध तीर्थस्थल बन गया।
- **विनाश:** पतन 12वीं शताब्दी के आसपास शुरू हुआ।
 - ऐतिहासिक विवरण कुतुबुद्दीन ऐबक (1193 ई.) के शासनकाल में हुए आक्रमणों को विनाश का कारण बताते हैं, हालांकि कुछ विद्वान बौद्ध धर्म के क्षीण होने के कारण धीरे-धीरे इसमें गिरावट का सुझाव देते हैं।
- **पुनः खोज:** 18वीं शताब्दी के अंत में इस स्थल की पुनः पहचान की गई।
 - अलेक्जेंडर कनिंघम (एसआई, 1861) और बाद में फ्रेडरिक ओर्टेल (1904-05) द्वारा व्यवस्थित उत्खनन से मूर्तियां, शिलालेख, मठ और अवशेष प्राप्त हुए।

स्रोत: [इंडियन एक्सप्रेस](#)

समाचार में स्थान

मोज़ाम्बिक

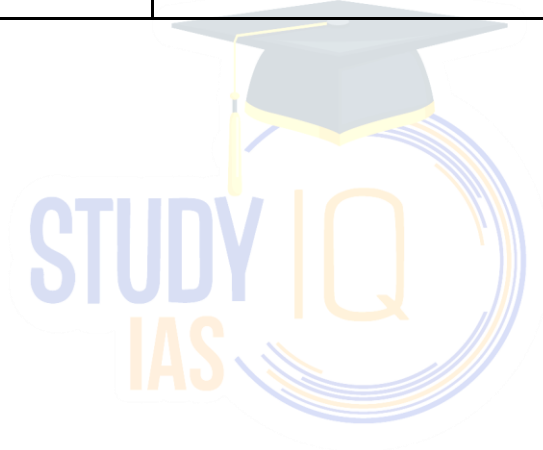


समाचार? भारतीय नौसेना का पहला प्रशिक्षण स्क्वाड्रन (ITS) जिसमें INS तीर, INS शार्दूल, INS सुजाता और ICGS सारथी शामिल हैं, मोज़ाम्बिक के मापुटो में प्रवेश कर गया।

मोज़ाम्बिक के बारे में -

- **अवस्थिति:** दक्षिणपूर्वी अफ्रीका,
- **सीमाएं:** हिंद महासागर (पूर्व), तंजानिया (उत्तर), मलावी और जाम्बिया (उत्तर पश्चिम), जिम्बाब्वे (पश्चिम), दक्षिण अफ्रीका और इस्वातिनी (दक्षिण पश्चिम)।
- **राजधानी:** मापुटो
- **प्रमुख नदियाँ:** ज़ाम्बेजी, लिम्पोपो, सेव, रोवुमा।

स्रोत: [पीआईबी](#)



मुख्य परीक्षा

स्वास्थ्य में जेब से किया जाने वाला खर्च

संदर्भ

भारत में, स्वास्थ्य देखभाल के लिए घरों द्वारा किया जाने वाला भुगतान मुख्यतः जेब से किया जाने वाला व्यय है, लेकिन जहां आधिकारिक आंकड़े (NHA) इसमें गिरावट दर्शाते हैं, वहीं अन्य सर्वेक्षणों से पता चलता है कि वास्तव में इसमें वृद्धि हो रही है, जिससे आंकड़ों में बड़ा अंतर उजागर होता है।

जेब से स्वास्थ्य व्यय (OOPE) -

- स्वास्थ्य में OOPE का तात्पर्य स्वास्थ्य सेवाओं का उपयोग करते समय परिवारों द्वारा किए गए प्रत्यक्ष भुगतान से है।
- इसमें परामर्श, दवाइयां, निदान, अस्पताल में भर्ती, अनौपचारिक शुल्क आदि की लागत शामिल है।
- इसमें सरकारी सब्सिडी, सामाजिक बीमा या नियोजित-आधारित कवरेज जैसी प्रीपेड व्यवस्थाएं शामिल नहीं हैं।

भारत में OOPE पर डेटा विसंगति

- **राष्ट्रीय स्वास्थ्य लेखा (NHA):** रिपोर्ट के अनुसार कुल स्वास्थ्य व्यय में OOPE की हिस्सेदारी 64% (2013-14) से घटकर 39% (2021-22) हो गई है।
- **एनएफएचएस-5 (2019-21):** प्रति अस्पताल में भर्ती होने पर बहुत अधिक OOPE दिखाता है - सार्वजनिक में ₹4,452 और निजी सुविधाओं में ₹26,475।
- **उपभोक्ता व्यय सर्वेक्षण (2022-23):** घरेलू उपभोग में OOPE की हिस्सेदारी बढ़ी (ग्रामीण: 5.9%, शहरी: 7.1%)।

भारत में उच्च OOPE के पीछे के कारण -

- **कम सार्वजनिक स्वास्थ्य व्यय:** भारत स्वास्थ्य पर सकल घरेलू उत्पाद का ~2% (संघ + राज्य) खर्च करता है, जो वैश्विक औसत ~6% से काफी कम है।
- **निजी स्वास्थ्य सेवा का प्रभुत्व:** लगभग 70% बाह्य रोगी और 60% अंतःरोगी देखभाल निजी क्षेत्र द्वारा प्रदान की जाती है, जो महंगी है।
- **उच्च चिकित्सा लागत:** OOPE में दवाओं और निदान का योगदान 60-70% है।
 - मूल्य विनियमन राष्ट्रीय आवश्यक औषधि सूची (एनएलईएम) के अंतर्गत आने वाली औषधियों के एक अंश तक ही सीमित है।
- **बीमा अंतराल:** स्वास्थ्य बीमा की कम पहुंच, विशेष रूप से अनौपचारिक क्षेत्र में।
 - आयुष्मान भारत-पीएम-जेएवाई जैसी योजनाएं भी केवल 50 करोड़ लोगों को ही कवर करती हैं, जिनमें काफी लोग शामिल नहीं हैं।
- **सीमित प्राथमिक स्वास्थ्य अवसंरचना:** कमजोर प्राथमिक देखभाल के कारण मरीजों को छोटी-मोटी बीमारियों के लिए भी महंगी तृतीयक स्वास्थ्य सुविधाओं की तलाश करनी पड़ती है।
- **महामारी प्रभाव:** कोविड-19 के कारण अस्पताल में भर्ती होने, ऑक्सीजन और दवाओं की उच्च लागत के कारण OOPE में वृद्धि हुई, जिसे एनएचएस के अनुमानों में काफी हद तक नजरअंदाज कर दिया गया।
- **अनौपचारिक लागतें:** शहरी केंद्रों में निदान के लिए गुप्त भुगतान, गैर-मानकीकृत शुल्क और उच्च व्यय।

OOPE बढ़ाने के परिणाम -

- **गरीबी और निर्धनता का जाल:** परिवार स्वास्थ्य देखभाल की लागत को पूरा करने के लिए बचत को नष्ट कर देते हैं, उधार लेते हैं, या संपत्ति बेच देते हैं।
- **विनाशकारी स्वास्थ्य व्यय:** परिवार स्वास्थ्य पर घरेलू उपभोग व्यय का 10% से अधिक खर्च करते हैं।
- **स्वास्थ्य देखभाल तक पहुंच में असमानता:** गरीब परिवार देखभाल से वंचित रहते हैं, उपचार में देरी करते हैं, या अनौपचारिक प्रदाताओं का विकल्प चुनते हैं, जिससे परिणाम और खराब हो जाते हैं।
- **अंतर-पीढ़ीगत प्रभाव:** बच्चों को स्कूल से निकाल दिया जाता है; महिलाओं को चिकित्सा लागत को पूरा करने के लिए अतिरिक्त कार्यभार उठाना पड़ता है।
- **पोषण और सामाजिक प्रभाव:** परिवार उपचार के लिए भोजन, आवास या शिक्षा व्यय में कटौती करते हैं।

आगे की राह -

- **सार्वजनिक स्वास्थ्य व्यय में वृद्धि:** 2025 तक सकल घरेलू उत्पाद का 2.5% (एनएचपी लक्ष्य)।
- **प्राथमिक देखभाल को सुदृढ़ बनाना:** निदान और दवाओं के साथ पूर्णतः कार्यात्मक स्वास्थ्य एवं कल्याण केंद्र।
- **बीमा का सार्वभौमिकीकरण:** पीएम-जेएवाई कवरेज का विस्तार करना और इसमें बाह्य रोगी देखभाल को शामिल करना।
- **सस्ती दवाएं और निदान:** जन औषधि को बढ़ावा देना; एनएलईएम कवरेज का विस्तार करना।
- **निजी क्षेत्र विनियमन:** मानक उपचार लागत लागू करना, अधिक बिलिंग कम करना।
- **वित्तीय सुरक्षा:** अनौपचारिक श्रमिकों के लिए सूक्ष्म बीमा और समुदाय आधारित बीमा।
- **डेटा की गुणवत्ता में सुधार:** यथार्थवादी OOPE अनुमानों के लिए NSS, NFHS, CES, LASI और CMIE सर्वेक्षणों को संयोजित करना।
- **डिजिटल स्वास्थ्य का लाभ उठाना:** पोर्टेबिलिटी, पारदर्शिता और लागत दक्षता के लिए आयुष्मान भारत डिजिटल मिशन।

स्रोत: [द हिंदू](#)

Government Interventions to Reduce OOPE



Ayushman Bharat (2018)
PM-JAY: Provides ₹5 lakh insurance cover per family per year for 50 crore beneficiaries.

National Health Mission

Focus on strengthening primary and secondary health infrastructure.



Jan Aushadhi Scheme
Provides affordable generic medicines through ~10,000 Jan Aushadhi Kendras.

Free Diagnostics & Maternal Health Schemes

States like Rajasthan (Mukhyamantri Nishulk Dawa Yojana) provide



Pradhan Mantri Ayushman Bharat Health Infrastructure Mission (PM-ABHIM, 2021)
Focus on critical care blocks, disease surveillance, and infrastructure strengthening.

हिमालय में भविष्य के लिए तैयार आपदा प्रबंधन

संदर्भ

जम्मू-कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, पंजाब और उत्तराखंड में 2025 के मानसून में आई बाढ़ ने भारत के पर्वतीय राज्यों की पारिस्थितिकीय नाजुकता को उजागर किया है और हिमालय में भविष्य के लिए तैयार आपदा प्रबंधन ढांचे की तत्काल आवश्यकता को रेखांकित किया है।

क्रियाशील प्रौद्योगिकी -

- **ड्रोन:** क्षति आकलन, राहत दलों के मार्गदर्शन तथा खोज एवं बचाव के लिए व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है।
- **उपग्रह संचार एवं वनवेब लिंक:** उन क्षेत्रों में समन्वय संभव हुआ जहां मोबाइल टावर ध्वस्त हो गए थे।
- **आईएमडी द्वारा डॉप्लर रडार एवं नाउकास्टिंग:** स्थानीय स्तर पर भारी वर्षा के लिए अल्पकालिक पूर्वानुमान दिया गया।
- **अस्थायी घटना कमान पोस्ट (आईसीपी):** एजेंसियों के बीच वास्तविक समय समन्वय की अनुमति दी गई।
- **जीआईएस-आधारित मानचित्रण:** समर्थित मार्ग नियोजन और संसाधन आवंटन।
- **विस्तार की गुंजाइश:**
 - जीएसआई को मृदा अवशोषण और ढलान प्रवणता के आधार पर भूस्खलन मानचित्रण का विस्तार करना चाहिए।
 - एनआरएससी को ग्लेशियल झीलों और मलबे के प्रवाह की 24x7 निगरानी करनी चाहिए।
 - **पूर्वानुमानित निगरानी:** संवेदनशील ढलानों, नदियों और ग्लेशियरों की निरंतर निगरानी के लिए ड्रोन।
 - **एआई मॉडल:** अचानक बाढ़ और बादल फटने की पूर्व भविष्यवाणी के लिए जल-मौसम संबंधी डेटा को एकीकृत करना।
 - **शहरी लचीलापन:** बाढ़ नियंत्रण के गोरखपुर मॉडल जैसे स्थानीय मॉडलों को अपनाना।

चुनौतियों पर प्रकाश डाला गया -

- **जागरूकता की कमी:** लाखों एसएमएस अलर्ट और सचेत ऐप के बावजूद, कई नागरिक इस बात को लेकर अनिश्चित थे कि कैसे प्रतिक्रिया दें।
- **तीर्थयात्रा की संवेदनशीलता:** मचैल, मणिमहेश और गंगोत्री जैसी यात्राएं रेड अलर्ट के बावजूद जारी रहीं, जिससे प्रतिक्रिया क्षमता पर दबाव पड़ा।
- **अनियंत्रित विकास:** नदी तल में निर्माण, ढलानों का अस्थिरीकरण और भवन निर्माण संहिताओं की अवहेलना। अवैध खनन ने तटबंधों को कमजोर कर दिया।
- **नागरिक तैयारी में अंतराल:** सामुदायिक अभ्यासों का अभाव, निकासी मार्गों या निकटतम आश्रयों के बारे में न्यूनतम जानकारी।
- **प्रौद्योगिकी अंतराल:** डॉप्लर रडार नेटवर्क घाटियों में विरल बना हुआ है; पूर्व चेतावनी प्रणालियां अभी तक स्थानीयकृत नहीं हैं।
- **प्रतिक्रिया-केन्द्रित दृष्टिकोण:** आपदा के बाद की कार्रवाई पर ध्यान केन्द्रित किया गया है; रोकथाम और लचीलेपन पर अभी भी कम जोर दिया गया है।
- **संस्थागत कमजोरियां:** डीडीएमए में अक्सर तकनीकी विशेषज्ञता और नागरिक समाज के साथ एकीकरण का अभाव होता है।

आगे की राह -

- **समुदाय-केंद्रित तैयारी:**
 - स्कूलों, पंचायतों, आरडब्ल्यूए में आपदा मित्र कार्यक्रम को गहरा करना।
 - मॉक ड्रिल को आवश्यक प्रशिक्षण मानना, न कि केवल औपचारिक अभ्यास।
 - निकासी प्रोटोकॉल सहित नागरिक पुस्तिकाएं।
- **स्केलिंग प्रौद्योगिकी:**
 - घाटियों में डॉप्लर रडारों का घना नेटवर्क।
 - ढलानों, नदियों और गांवों का जीआईएस-आधारित जोखिम मानचित्रण।
 - ड्रोन आधारित पूर्वानुमानित निगरानी, एआई पूर्वानुमान मॉडल के साथ युग्मित।
 - हिमनद झीलों और मलबे के प्रवाह की निरंतर निगरानी करेगा।
- **मजबूत बुनियादी ढांचा और “बेहतर पुनर्निर्माण”:**
 - ढलान स्थिरीकरण तकनीक से सड़कों का पुनर्निर्माण किया गया।
 - निर्माण निषेध क्षेत्र लागू करना, भूकंपीय भवन संहिता का सख्ती से पालन करना।
 - नदी तटबंधों को सुदृढ़ करना, अवैध रेत खनन पर अंकुश लगाना।
- **संस्थागत सुदृढ़ीकरण:**
 - तकनीकी रूप से उन्मुख आपदा प्रबंधन कैडर का निर्माण करना।
 - नागरिक समाज और स्थानीय ज्ञान को एकीकृत करने के लिए डीडीएमए को सशक्त बनाना।
 - स्कूलों और कार्यस्थलों में आपदा जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन अनिवार्य करना।
- **विकास और पारिस्थितिकी में संतुलन:**
 - टिकाऊ निर्माण पद्धतियों को अपनाना।
 - मौसमी प्रतिबंधों के साथ पारिस्थितिक पर्यटन और विनियमित तीर्थयात्रियों को बढ़ावा देना।

स्रोत: [इंडियन एक्सप्रेस](#)

ईरान परमाणु संकट और भारत की भूमिका

संदर्भ

जून 2025 में संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा ईरान के फोर्डो परमाणु संयंत्र पर किए गए हमले, तथा उसके बाद E3 द्वारा 2015 जेसीपीओए के स्नेपबैक क्लॉज को सक्रिय करने से ईरान के परमाणु कार्यक्रम को लेकर तनाव फिर से बढ़ गया है।

वैश्विक दांव: एक अंतर्राष्ट्रीय संबंध परिप्रेक्ष्य -

● बहुपक्षवाद के लिए चुनौती:

- E3 (यूके, जर्मनी, फ्रांस) द्वारा स्नेपबैक क्लॉज का आह्वान अंतर्राष्ट्रीय समझौतों की विश्वसनीयता की परीक्षा है।
- यदि जेसीपीओए विफल हो जाता है, तो इससे हथियार नियंत्रण के लिए बातचीत का मानदंड कमजोर हो सकता है और अन्य देशों को बहुपक्षीय व्यवस्थाओं से अलग होने के लिए प्रोत्साहन मिल सकता है।

● अमेरिका बनाम संशोधनवादी शक्तियां:

- अमेरिका इस संकट को परमाणु अप्रसार व्यवस्था के लिए एक अग्निपरीक्षा के रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास कर रहा है, तथा अपनी प्रधानता की पुनः पुष्टि करना चाहता है।
- हालाँकि, रूस और चीन इस स्थिति को अमेरिकी प्रभुत्व को खत्म करने, तेहरान के साथ संबंधों को मजबूत करने और खुद को वैकल्पिक शक्ति दलाल के रूप में पेश करने के अवसर के रूप में देखते हैं।

● क्षेत्रीय सुरक्षा संरचना में परिवर्तन:

- इजराइल और खाड़ी के राजतंत्र ईरान के परमाणु प्रक्षेप पथ को अस्तित्व के लिए खतरा मानते हैं, जिससे क्षेत्र सुरक्षा दुविधा की ओर बढ़ रहा है - जहां एक राज्य की सुरक्षा की चाहत दूसरों के लिए असुरक्षा को बढ़ाती है।
- पश्चिम एशिया में निवारक हमलों या छद्म वृद्धि की संभावना बढ़ जाती है।

● ऊर्जा भूराजनीति:

- वैश्विक तेल व्यापार का 20% हिस्सा होर्मुज जलडमरूमध्य से होकर गुजरता है, अतः अस्थिरता से वैश्विक आर्थिक उथल-पुथल का खतरा है।
- आयात पर निर्भर अर्थव्यवस्थाएं (भारत, जापान, यूरोपीय संघ) मूल्य अस्थिरता का सामना करती हैं, जबकि निर्यातक (रूस, खाड़ी देश) लाभ उठा सकते हैं।

● अप्रसार व्यवस्था की विश्वसनीयता:

- यदि ईरान, स्नेपबैक उपायों के जवाब में एनपीटी से बाहर निकलता है, तो यह उत्तर कोरिया (2003) के बाद पहला बड़ा पलायन होगा, जिससे वैश्विक परमाणु अप्रसार संरचना को गंभीर झटका लगेगा।
- इससे डोमिनो प्रभाव उत्पन्न हो सकता है, तथा अन्य देश अपने परमाणु विकल्पों पर पुनः विचार कर सकते हैं।

सत्यापित तथ्यों में अंतर -

- **आईएईए निरीक्षण का अभाव:** निष्पक्ष जाँच के बिना, ईरान के परमाणु मुद्दे पर बातचीत केवल खुफिया दावों पर निर्भर करती है। इससे गलत निर्णय और यहाँ तक कि सैन्य कार्रवाई की संभावना बढ़ जाती है।
- **तुलना:** यूक्रेन में, जापोरिजिया परमाणु संयंत्र में IAEA की उपस्थिति ने बाज़ारों को विश्वसनीय जानकारी दी, जिससे घबराहट कम हुई। ईरान में, ऐसी निगरानी के अभाव से तेल, व्यापार और वित्त में अनिश्चितता बढ़ रही है।
- **विश्वास का संकट:** जब वैश्विक संस्थाएं सत्यापित तथ्य उपलब्ध नहीं करा पातीं, तो देश अपने स्वयं के आख्यानों पर निर्भर हो जाते हैं, जो प्रायः रणनीतिक हितों से प्रभावित होते हैं।

ईरान की रणनीतिक चिंताएँ -

- **संप्रभुता बनाम नियम:** ईरान का तर्क है कि उसकी संप्रभुता संधि प्रतिबद्धताओं से ज़्यादा महत्वपूर्ण है। वह निरीक्षणों को सुरक्षा जोखिम मानता है।
- **अतीत का अनुभव:** अतीत में इजरायल और अमेरिका के हमले IAEA के खुलासे के तुरंत बाद हुए थे, जिससे ईरान को निरीक्षणों पर भरोसा नहीं रहा।
- **अस्पष्टता के लाभ:** विवरण अस्पष्ट रखकर, ईरान वार्ता में सौदेबाजी की शक्ति हासिल कर लेता है, जिसे खेल सिद्धांत में "रणनीतिक अस्पष्टता" के रूप में जाना जाता है।
- **एनपीटी से बाहर निकलने का खतरा:** यदि ईरान परमाणु अप्रसार संधि (एनपीटी) से बाहर निकलता है, तो इससे आईएईए का अधिकार और वैश्विक परमाणु मानदंड कमजोर हो जाएंगे।

भारत क्या भूमिका निभा सकता है?

- **राजनयिक मध्यस्थता:**
 - आईएईए बोर्ड के दीर्घकालिक सदस्य के रूप में भारत को सभी क्षेत्रों में विश्वसनीयता प्राप्त है।
 - एससीओ और ब्रिक्स (दोनों में ईरान भी शामिल है) के भीतर, भारत आईएईए तक पहुंच बहाल करने के आह्वान का समर्थन कर सकता है, जिसे बाहरी रियायत के बजाय ईरान की संप्रभुता के विकल्प के रूप में देखा जा सकता है।
- **तकनीकी योगदान:**
 - भारत की आईएईए प्रमाणित तारापुर सुविधा सुरक्षा उपायों के तहत परमाणु नमूना विश्लेषण कर सकती है, जिससे ईरान की संवेदनशीलता का सम्मान करते हुए पारदर्शिता बढ़ेगी।
 - सुरक्षा उपायों पर विशेषज्ञता साझा करने से ईरान के नागरिक दावे मजबूत हो सकते हैं।
- **वैश्विक दक्षिण की आवाज:**
 - वैश्विक दक्षिण के दृष्टिकोण के साथ तालमेल बिठाकर, भारत संतुलित सत्यापन की वकालत कर सकता है जो अनुपालन सुनिश्चित करते हुए संप्रभुता की रक्षा करता है।
- **अपने हितों की रक्षा करना:**
 - **ऊर्जा सुरक्षा:** होर्मुज जलडमरूमध्य से तेल प्रवाह में स्थिरता सुनिश्चित करना।
 - **प्रवासी सुरक्षा:** पश्चिम एशिया में 8 मिलियन भारतीयों की सुरक्षा।
 - **क्षेत्रीय स्थिरता:** भारत के विस्तारित पड़ोस में तनाव को रोकना।
- **एक जिम्मेदार शक्ति के रूप में छवि:** सक्रिय भागीदारी वैश्विक परमाणु शासन में एक आदर्श उद्यमी होने के भारत के दावे को बढ़ाती है।

स्रोत: द हिंदू